हिन्दी शिक्षण विधि

प्रत्यक्ष विधि

प्रत्यक्ष विधि का अर्थ होता है–वस्तुओं को प्रत्यक्ष में दिखाना। इस विधि को सुगम पद्धति अथवा निर्बाध विधि अथवा प्राकृतिक विधि भी कहते हैं।

तात्पर्य यह है कि वस्तुओं व जीव–जन्तुओं का चित्र अथवा प्रतिमान दिखाकर क्रियाओं को करके दिखाना।

इस विधि का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांस में 1901 में अंग्रेजी भाषा के लिए किया गया। इस विधि का प्रयोग सर्वप्रथम 1901 ई. में फ्रांस राष्ट्र में 'श्री गुइन' महोदय द्वारा किया गया। व्याकरण अनुवाद के विरोध में प्रत्यक्ष विधि का अस्तित्व 17 वीं शताब्दी में केमिसयन और 18 वीं शताब्दी में जान बैसडो ने इस विधि का समर्थन किया।

प्रत्यक्ष विधि के उपनाम – नवीन पद्धति, नैसर्गिक पद्धति, तार्किक पद्धति, उपर्युक्त पद्धति, स्वनिकी पद्धति, अनुकरण पद्धति, वार्तालाप पद्धति।

प्रत्यक्ष–पद्धति का सूत्रापात पश्चिमी देशों में हुआ। प्रत्यक्ष विधि का अर्थ होता है–

- वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप में दिखाना।
- वस्तुओं व जीव जन्तुओं का चित्र अथवा प्रतिमान दिखाना
- क्रियाओं को करके दिखाना।
- भारत में 1908 में प्रत्यक्ष पद्धति अपनाई गई।
- बंगाल में श्री टिपिंग को, बम्बई में श्री फ्रेजर को और मद्रास में श्री येट्स को इस पद्धति को सर्वप्रथम अपनाने का श्रेय दिया जाता है।

प्रत्यक्ष विधि के गुणः–

- इस पद्धति में वार्तालाप, मौखिक कार्य एवं बोलने के अभ्यास पर बल दिया जाता है।
- यह विधि मनोवैज्ञानिक है।
- इस पद्धति में अन्य भाषा को स्वतन्त्र एवं पृथक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।
- इस पद्धति में मातृभाषा के प्रयोग को सीमित कर दिया जाता है और सम्पूर्ण वाक्य को इकाई माना जाता है।
- सीमित शब्द–ज्ञान का प्रयोग करके शब्दावली को नियन्त्रित कर दिया जाता है।
- यह विधि भाषा कौशल का विकास करती है। इसमें लेखन के सभी कौशल पैदा नहीं हो पाते।
- प्रत्यक्ष पद्धति में अन्य भाषा के अध्ययन के समय अन्य भाषा में ही आदेश, निर्देश दिये जाते हैं (अंग्रेजी पढ़ाते समय अंग्रेजी, हिन्दी पढ़ाते समय हिन्दी इस प्रकार) और उसी में विचारों की अभिव्यक्ति की जाती है।
- इस पद्धति का मुख्य सिद्धांत यह है कि जिस प्रकार बालक श्रवण एवं अनुकरण द्वारा मातृभाषा सीख लेता है, उसी प्रकार वह दूसरी भाषा भी सीख सकता है।
- इस पद्धति से व्याकरण–अनुवाद प्रणाली के दोष अपने आप दूर हो जाते हैं।
- व्याकरण की सहायता इस पद्धति में नहीं ली जाती है।
- भाषा तत्वों पर जोर नहीं देती।
- दूसरी भाषा सीखने में उसी भाषा का माध्यम अपनाया जाता है, अतः अनुवाद की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- भाषा के दो आधारभूत कौशलों–सुनना और बोलना को सीखने का पर्याप्त अवसर मिलता है तथा उस भाषा की ध्वनियों एवं उच्चारणों से बालक सहज ही परिचित हो जाता है।

हिन्दी साहित्य चैनल

- यह विधि भाषा शिक्षण के मूल सिद्धान्तों के अनुकूल है।
- अनुभूति और अभिव्यक्ति में सीधा सम्बन्ध होना चाहिए, बीच में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए।
- इस विधि में हिन्दी भाषा के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाया जाता है, अतः इससे अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है।
- इसमें बच्चे को अ से अनार, ई से ईख, चार्ट में चित्र के साथ या प्रत्यक्ष दिखाकर इन अक्षरों को लिखकर दिया जाता है।

प्रत्यक्ष विधि के दोषः–

- प्रत्यक्ष विधि से सीमित शब्दावली का ही ज्ञान दिया जा सकता है।
- अनेक शब्द ऐसे होते हैं जिनकी प्रत्यक्ष व्याख्या नहीं हो सकती, जैसे सर्वनाम व विशेषण शब्दों का ज्ञान करवाना संभव नहीं है।
- यह कमजोर बालकों के लिए अधिक उपयोगी नहीं है।
- इस विधि में कठिनाई यह है कि कुछ संज्ञा शब्दों–पुस्तक, कलम, गेंद, कागज, कुर्सी, मेज, लङका, लङकी आदि का ज्ञान तो करा दिया जाता है पर भाववाचक शब्दों एवं विशेषणों एवं संरचनात्मक शब्दों के ज्ञान में बङी कठिनाई होती है।
- इस विधि में वाक्य–संरचनाओं का पर्याप्त ज्ञान नहीं कराया जा सकता। प्रश्नोत्तर विधि द्वारा कुछ वाक्यों की संरचना तो बता दी जाती है जैसे, यह क्या है ? वह क्या है ? पर सभी प्रकार की वाक्य–संरचनाओं का ज्ञान कराना बहुत कठिन है।
- सुनने और बोलने पर अधिक बल होने से वाचन और लेखन गौण हो जाते हैं।
- इसके द्वारा केवल संज्ञा या उन शब्दों का ज्ञान दिया जा सकता है जिनके चित्र आदि बन सकें या जिन चीजों को कक्षा तक लाया जा सके।

प्रत्यक्ष पद्धति से पढ़ाने में लेखन तथा व्याकरण के ज्ञान का अभाव रहता है।

हिन्दी साहित्य चैनल